Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPSC

भूगोल

OPTIONAI

संघ लोक सेवा आयोग

पेपर - 1 || भाग - 3

कृषि, अधिवास, जनसँख्या एवं मानव भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	कृषि भूगोल (अर्थ, प्रकृति, एवं विषयक्षेत्र)	1
2	कृषि के प्रकार	8
3	कृषि उत्पादकता	14
4	विश्व के कृषि प्रदेश	46
5	वॉन थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति सिद्धांत	62
6	ग्राम्य आकारिकी	74
7	ग्रामीण समस्याएं एवं नियोजन	79
8	ग्रामीण अधिवासों के प्रकार	87
9	ग्रामीण-नगरीय उपान्त	100
10	नगरीय आकारिकी	106
11	नगरीकरण	115
12	नगरीय प्रभाव क्षेत्र या अमलैण्ड	127
13	कोटि-आकार नियम	135
14	उपनगर	139
15	क्रिस्टालर का केन्द्र स्थल सिद्धान्त	146
16	लॉश का केन्द्रीय स्थल सिद्धांत	153
17	विश्व में जनसंख्या वृद्धि	157
18	जनसंख्या पिरामिड	185
19	जनसंख्या नीति	189
20	अनुकूलतम् जनसंख्या	195
21	जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत	198
22	जनसंख्या वृद्धि सिद्धान्त	203
23	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	207

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	प्रवास	215
25	भारत की जनजातियाँ	233

1 अध्याय

कृषि भूगोल (अर्थ, प्रकृति एवं विषय क्षेत्र)

कृषि भूगोल Agricultural Geography

↳ हिन्दी में कृषि शब्द की उत्पति संस्कृत की कृषि धातु से हुई है जिसका तात्पर्य जोतना या खींचना होता है।

↳ कृषि के अंग्रेजी शब्द (Agricultural) शब्द की रचना लेटिन भाषा के दो शब्दों Agre – Land या field व
cultura – cultivation से बना है।

↳ जिसका अर्थ – भूमि को जोतकर फसल पैदा करना।

परिभाषाएँ :-

(1) वाटसन :- कृषि मृदा संस्कृति है जिसमें पशुपालन व फसल उत्पादन दोनों शामिल हैं।

(2) मेकार्टी :- कृषि सौद्देश्य फसल उत्पादन व पशुपालन है।

(3) एच बर्नहार्ड :- कृषि भूगोल कृषि की स्थानिक भिन्नताओं एवं उनके कारणों को स्पष्ट करता है।

(4) रीड्स :- विस्तृत अर्थों में कृषि भूगोल कृषि की क्षेत्रीय भिन्नता का वर्णन एवं व्याख्या करता है।

(5) ओट्रेम्बा :- कृषि के विभिन्न तत्वों के स्थानिक विन्यास को कृषि भूगोल के अन्वेषण का उद्देश्य माना जाता है

(6) साइमन्स :- कृषि भूगोल मानव द्वारा भूमि पर कृषि क्रिया-कलापों का अध्ययन है।

जिम्मर मैन :-

↳ कृषि के अन्तर्गत भूमि से जुड़े हुए सभी मानवीय खेल निर्माण, जुताई, बुआई, फसल उगाना, सिंचाई करना, पशु-पालन, मत्स्य पालन को शामिल किया जाता है।

कृषि भूगोल की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र :-

↳ कृषि भूगोल, आर्थिक भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिससे कृषि संबंधी कार्य – फसल उत्पादन, जुताई, बुआई

सिंचाई, पशुपालन, मत्स्यपालन के भौतिक व सांस्कृतिक पर्यावरण का विश्लेषण करते हुए स्थानिक संबंधो पर बल दिया जाता है।

फाचर (1949) :-

↳ कृषि भूगोल को, आर्थिक भूगोल से स्वतंत्र शाखा मानते हुए आर्थिक भूगोल में कृषि के अध्ययन के अन्तर्गत फसलों के वितरण, उत्पादन, उपभोग का मात्रात्मक विश्लेषण किया जाता है लेकिन कृषि भूगोल में ग्रामीण भू-दृश्य के कारणों व परिणामों का गुणात्मक विश्लेषण किया जाता है।

बर्नहार्ड (1915) :-

↳ कृषि भूगोल को कृषि भूगोल व कृषि विज्ञान दोनों माना है क्योंकि इसमें विषय वस्तु कृषि विज्ञान की है जबकि विधि का सम्बंध भूगोल से है।

↳ बर्नहार्ड की विचारधारा हेटनर द्वारा प्रतिपादित तीन महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं पर आधारित है :-

विस्थित विज्ञान	ऐतिहासिक विज्ञान	भौगोलिक विज्ञान
↳ इसमें समानता व असमानता, एक रूपता व अनेक साहचर्य व विशायन विधियों का उपयोग किया जाता है।	↳ इसमें कृषि की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं एव अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।	↳ इसमें कृषि क्षेत्र तथा उत्पादन के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है।

↳ बर्नहार्ड ने कृषि विज्ञान की व्यवस्था को प्रस्तुत करके कृषि भूगोल का स्थान निर्धारित किया है।

(1) ऐतिहासिक दृष्टिकोण – कृषि का इतिहास

(2) भौगोलिक दृष्टिकोण – कृषि भूगोल

(3) व्यवस्थित भूगोल – (A) कृषि प्रौद्योगिक
- पौधों का उत्पादन
- पशुपालन
- सम्बद्ध कृषि तकनीक

(B) कृषि अर्थशास्त्र

(B) कृषि अर्थशास्त्र

↳ वीबल 1933 ने कृषि भूगोल को विशेष रूप से सैद्धान्तिक एवं उपयोगी बताया है व कृषि विज्ञान से अलग रखा है इन्होंने कृषि भूगोल का लक्ष्य धरातल पर कृषि की प्रादेशिक विभिन्नताओं और विशेषताओं का विश्लेषण का विश्लेषण करना बताया और उसे तीन उपशाखाओं में विभक्त किया –

(1) सांख्यिकीय कृषि भूगोल - आकड़ों के आधार पर पशुओं व फसलो का वितरण।

(2) पारिस्थितिकीय कृषि भूगोल – कृषि व फसलों व पशुओं में साहचर्य।

(3) आकृतीय कृषि भूगोल – कृषि द्वारा निर्धारित भू–दृश्यों जैसे– फसल, सड़क, नहर, गाँव आदि का अध्ययन किया जाता है।

जार्ज ने कृषि भूगोल को तीन पक्षों में विभाजित किया है :–

(1) भौतिक पर्यावरण एवं कृषि क्रिया।

(2) जनसंख्या घनत्व तथा कृषि भूमि उपयोग का संबंध।

(3) ऐतिहासिक विकास तथा कृषि अवस्था।

↳ औट्रेम्बा 1960 ने प्राकृतिक पर्यावरण की अपेक्षा, कृषि भूगोल की विषय वस्तु के अध्ययन में मानवीय पक्षों को अधिक महत्वपूर्ण बताया।

↳ इन्होंने कृषि भूगोल में तीन पक्षों पर अधिक जोर दिया :–

(i) ऐतिहासिक पक्ष
(ii) आर्थिक पक्ष
(iii) सामाजिक पक्ष

कृषि भूगोल का विषय क्षेत्र :–

↳ कृषि मानव का एक प्राचीनतम उद्यम है लेकिन इसके विषय क्षेत्र में समय-समय पर बदलाव आया है कृषि करने का तरीका भी समय के साथ-साथ बदलता गया।

↳ सन् 1960 से पहले कृषि भूगोल में केवल खाद्यान्न उत्पादन से

सम्बंधित अध्ययन को शामिल किया जाता था लेकिन 1960 के पश्चात कृषि में की गई शोधों एवं खोजों के परिणामस्वरूप इस विषय ने विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप कृषि प्रकार एवं कृषि पद्धतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।

कृषि भूगोल के उपागम :-

↳ कृषि भूगोल की विषय सामग्री में विविधता है तथा इस शाखा का उद्देश्य कृषि क्रियाओं के स्थानीकरण एवं वितरण तथा उनका पर्यावरण से संबंध स्थापित करना है इस उद्देश्य से विषय सामग्री को कई तरह से देखा एवं विश्लेषित किया जाता है विषय विश्लेषण के इस दृष्टिकोण को ही उपागम कहा जाता है।

↳ भूगोल की अन्य शाखाओं की भाँति कृषि भूगोल में भी अध्ययन के लिए निम्न उपागमों का सहारा लिया जाता है।

↳ कृषि भूगोल में चिशोल्म महोदय ने तीन महत्वपूर्ण उपागम बताये

(1) क्रमबद्ध उपागम
(2) प्रादेशिक उपागम
(3) सैद्धान्तिक उपागम

(1) क्रमबद्ध उपागम :-

↳ भूगोल पृथ्वी तल के विभिन्न तत्वों के स्थानिक वितरण का वर्णन करता है। इसमें तत्व एवं स्थान दोनों का अध्ययन किया जाता है। तत्वों का वर्णन एवं व्याख्या क्रमबद्ध उपागम तथा क्षेत्रों (स्थानों) का अध्ययन प्रादेशिक उपागम कहलाता है।

↳ हम्बोल्ट व रिटर इस उपागम के जन्म दाता माने जाते हैं।

↳ कृषि के स्वरूप की व्याख्या के लिए क्रमबद्ध उपागम के अन्तर्गत कृषि के किसी तत्व को आधार मानकर अध्ययन किया जाता है।

वस्तु परख उपागम :-

↳ इस उपागम का उद्देश्य किसी क्षेत्र के सभी कृषि तथ्यों को क्रमबद्ध रूप में देखना है।

↳ इसमें फसल/कृषि पद्धति, फसलों का उपयोग आदि मुख्य है।
↳ कृषि उत्पादों के प्रतिरूपो के अध्ययन को वस्तु परख उपागम कहा जाता है।
↳ इस उपागम में कृषिगत वस्तुओं को अध्ययन का विषय बनाया जाता है जैसे चावल, गेहूँ, रबर, बागानी आदि।
↳ ऐसे अध्ययनों में सन्दर्भित फसल के सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है।

प्रादेशिक उपागम :-

↳ इस उपागम में सर्वप्रथम विश्व को कृषि प्रदेशों में विभक्त किया जाता है उसके बाद एक प्रदेश में सभी फसलों के वितरण तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाता है लेकिन यह विश्लेषण एक तत्व का न होकर सम्पूर्ण कृषि भू-दृश्यों का होता है जिसमें इस क्षेत्र की कृषि को प्रभावित करने वाले भौतिक व मानवीय कारकों को शामिल किया जाता है।

सैद्धान्तिक उपागम :-

↳ इस उपागम के अन्तर्गत कृषि सम्बंधी विशेषताओ का विश्लेषण प्रायोगिक सिद्धान्तो के सन्दर्भ में किया जाता है इनका मुख्य उद्देश्य सिद्धान्तों एवं परिकल्पनाओं का निर्माण और परीक्षण करना है।

कृषि भूगोल का विकास :-

↳ कृषि भूगोल की विकास यात्रा बहुत ही लम्बी रही है खासकर भारत में कृषि बहुत पहले से होती आ रही है इसी कारण भूगोल का एक विषय के रूप में विकास के साथ ही इसमें कृषि से जुड़ी विषयवस्तु का समावेश भी होता गया लेकिन एक अलग विषय के रूप में इसका विकास 18 वीं शताब्दी में ही हो पाया, इस प्रकार हम कह सकते है कि कृषि भूगोल एक स्वतन्त्र विषय के रूप में अभी नवीन है।
↳ 18 वीं शताब्दी में सबसे पहले रोमन व यूनानी भूगोलवेताओं ने अपने आस-पास होने वाली कृषि का अध्ययन अपने ग्रन्थों में किया लेकिन ये अध्ययन पूर्ण नहीं होने के कारण इस ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

↳ इंग्लैण्ड के आर्थर यंग ने 1770 में कृषि भूगोल पर प्रथम पुस्तक लिखी।
↳ जर्मन भूगोलवेता हम्बोल्ट ने क्यूबा, मैक्सिको व दक्षिण अमेरिका में की जाने वाली कृषि की विस्तृत व्याख्या की व कृषि एवं मृदा के बीच सम्बंध का अध्ययन भी किया।
↳ 1826 में वान थ्यूनेन द्वारा कृषि अवस्थितिकी मॉडल दिया गया।
↳ 1883 में इंगोलब्रेच ने अमेरिका के फसल/कृषि क्षेत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया।
↳ क्रिज्मोवस्की ने 1911 में कृषि भूगोल को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया व एक पुस्तक लिखी. Scientific position of Agricultural Geography
↳ जॉनसन ने यूरोप के कृषि प्रदेशों का अध्ययन किया व वान थ्यूनेन के मॉडल को यूरोप के कृषि प्रदेशो के ऊपर लागू किया।
↳ बेकर 1926 ने उत्तरी अमेरिका के कृषि प्रदेशों का अध्ययन किया व 13 कृषि प्रदेशों में विभाजित किया।
↳ ट्रिवार्था ने 1942 में अमेरिकन फार्मस्टेड का विवेचन किया तथा स्टैम्प के निर्देशन में भूमि उपयोग सम्बंधी प्रथम अध्ययन Land utilization in Eastern U.P नामक शीर्षक से किया।
↳ 1950 के बाद कृषि भूगोल के विषय क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन आया व इसकी विषय वस्तु में अध्ययन विधियों, उपागमों में वैज्ञानिक विश्लेषण को महत्व दिया जाने लगा। मैकार्टी, बुकानन, रीड्स ने कृषि भूगोल में प्रारम्भिक अध्ययनों का समीक्षात्मक या समालोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया।
↳ बर्क, वीवर, हेलबर्न ने कृषि भूगोल में सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया।
↳ ब्लैट ने एक नया क्षेत्रिय प्रतिदर्शी उपागम प्रस्तुत किया।
↳ अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ द्वारा 1964 में कारयोविकी की अध्यक्षता में कृषि के प्रकारों पर एक आयोग गठित किया जिसमें कारयोविकी द्वारा Agricultural Typology of world का प्रकाशन किया जिसमें कृषि प्रकारों हेतु एक नई पद्धति का विकास किया गया

↳ बुगे व बर्टन ने मात्रात्मक क्रान्ति के समय सैद्धान्तिक उपागम प्रस्तुत किया तथा हार्वे ने भूमि उपयोग मॉडल प्रस्तुत किया।

↳ इस प्रकार कृषि भूगोल के विकास को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है :-

(1) 1950 से पहले	(2) 1950 - 1960	(3) 1960 के बाद
↳ इस काल मे कृषि भूगोल में प्रादेशिक विवरणों की प्रधानता रही। ↳ इस समय आगमनात्मक विधियों का प्रयोग अधिक चलन में था।	↳ इस समय प्रादेशिक उपागम के स्थान पर क्रमबद्ध उपागम पर जोर दिया जाने लगा।	↳ इस काल में संभववादी दृष्टिकोण पर अधिक बल दिया गया इस समय कृषि में मानवीय हस्तक्षेप की प्रधानता हो गयी।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 अध्याय कृषि के प्रकार

कृषि के प्रकार

↳ कृषि वह क्रिया है जिसके द्वारा मिट्टी से फसलों को उत्पन्न किया जाता है।
↳ कृषि के अन्तर्गत भूमि साफ करने व मिट्टी की जुताई से लेकर फसल उगाने, काटने तथा उत्पाद प्राप्त करने तक की विविध क्रियाऐं शामिल है।
↳ हिन्दी में कृषि शब्द का प्रयोग agriculture और farming दोनों के लिए किया जाता है। ये दोनों एक जैसी क्रियाऐं लगती है लेकिन इनमें कुछ मौलिक अन्तर है।
↳ farming शब्दावली की उत्पति farm (खेत) से हुई है खेत पर काम करने वाले को कृषक या किसान (Farmer) कहा जाता है इसी अर्थ में कृषक की क्रिया को खेती या कृषि कहा।
↳ खेत के अन्तर्गत किसी भूखण्ड एवं भवनों को समाप्त किया जाता है। जिसका प्रयोग कृषि के लिये किया जाता है। खेती मुख्यत: उत्पादन विधि और भू-स्वामित्व से सम्बद्ध होती है जिसमें कृषि करने का ढंग और कृषि उत्पादनों को शामिल किया जाता है।

कृषि के प्रकार :-

(A) भूमि की उपलब्धता :-

↳ इस आधार पर कृषि को दो प्रकारों में बाँटा जाता है :->
(1) गहन कृषि।
(2) विस्तृत कृषि।

(1) गहन कृषि (intensive Agriculture) :-

↳ इस प्रकार की कृषि, अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों मे की जाती है। अधिक जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि का अभाव होता है।
↳ इसमें कृषि जीवन निर्वहन प्रकार की जाती है।
↳ इसमें मानवीय श्रम की प्रधानता अधिक होती है।

↳ इस कृषि में खाद्यान्न फसल की अधिकता होती है।
↳ क्षेत्र :- दक्षिण एशिया, दक्षिणी-पूर्वी एशिया, ब्रिटेन, फ्रांस जर्मनी, नीदरलैण्ड।

(2) विस्तृत कृषि :-

↳ इस प्रकार की कृषि कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में की जाती है क्योंकि यहाँ कृषि भूमि की अधिकता होती है
↳ इसमें मानवीय श्रम का प्रयोग कम व मशीनों का प्रयोग अधिक किया जाता है।
↳ इस कृषि में व्यापारिक अन्न उत्पादन किया जाता है।
↳ यह कृषि विकसित देशों में की जाती है।

(3) उत्पादन के उद्देश्य एवं विधि :-

↳ इस आधार पर कृषि को 3 भागों में विभाजित किया जाता है :→

(1) निर्वाह मूलक कृषि (subsisten sive Agriculture) :-

↳ इस प्रकार की कृषि अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाती है।
↳ यहाँ कृषि योग्य भूमि की कमी होती है।
↳ कृषि प्राचीन उपकरणों से की जाती है।
↳ कृषि कार्य अपने भरण-पोषण के लिए ही किया जाता है
↳ इस कृषि प्रदेश में खाद्यान फसलों का ही उत्पादन किया जाता है।
↳ कृषि प्राचीन तरीके से की जाती है।
↳ भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मलेशिया, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कोरिया, मिस्त्र, इथोपिया आदि अल्प विकसित देशों में की जाती है।

(2) व्यापारिक कृषि :-

↳ इस प्रकार की कृषि कम जन घनत्व वाले क्षेत्रों में की जाती है।

↳ इस कृषि में खेतों का आकार बड़ा होता है।
↳ इसमें कृषि के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।
↳ कृषि व्यापारिक तरीके से की जाती है।
↳ यह कृषि मुख्य रूप से शीतोष्ण कटिबंध में की जाती है

(3) झूम कृषि :-

↳ यह आदिम प्रकार की कृषि है।
↳ यह कृषि जनजातियों द्वारा की जाती है।
↳ इसमें जंगलों को काटकर-जलाकर कृषि की जाती है फिर कुछ सालों बाद दूसरे स्थान पर जंगलों को काटकर, जलाकर कृषि की जाती है।

(4) बागानी कृषि (Plantation Agriculture) :-

↳ इसे रोपण व बागानी कृषि भी कहा जाता है।
↳ इसमें पौधों को लगाने के बाद कई सालों तक फल देते रहते है
↳ इसमें नगदी फसलों की कृषि की जाती है।
↳ इसमें चाय, कहवा, कोको, गन्ना, केले आदि की कृषि की जाती है।

(c) उत्पादित पदार्थ :- के अनुसार कृषि को कई प्रकार में विभाजित किया जाता है :-

(1) फसली कृषि :-

↳ इसमें मुख्यतः फसलों को उगाया जाता है।
↳ शस्य गहनता के आधार पर फसली कृषि को तीन भागो में बाँटा जाता है:, (1) एक फसली
(2) द्वि फसली
(3) बहु फसली

(i) एक फसली :-

↳ इसके अन्तर्गत वर्ष में एक फसल को ही उगाया जाता है।
↳ यह कृषि बड़े क्षेत्रों में की जाती है।

(ii) द्वि-फसली :-

↳ वर्ष में दो फसले की जाती है।
↳ सघन जनसंख्या क्षेत्रों में इस प्रकार की कृषि की जाती है

(iii) बहुफसली :-

↳ एक से अधिक फसलों का उत्पादन किया जाता है।

(2) पशुपालन कृषि :-

↳ इसमें चलवासी पशुचारण से लेकर विशिष्टीकृत पशुपालन तक शामिल किया जाता है।
↳ इसमें कृषि की जगह पशुपालन किया जाता है।
↳ पशुओं से बनी वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

(3) मिश्रित कृषि :-

↳ इसमें कृषि व पशुपालन दोनों साथ-साथ किये जाते है।
↳ इसको दो भागों में बाँटा जाता है :→
(i) निर्वाह मूलक फसल एवं पशु उत्पादक कृषि।
(ii) व्यापारिक

(4) दुग्ध पशुपालन :-

↳ इसमें केवल पशुपालन किया जाता है।

(D) भूस्वामित्व :-

↳ इस आधार पर कृषि को तीन भागों में बाँटा जाता है :→

(1) सामूहिक कृषि (Colleetive farming) :-

यह एक विशिष्ट प्रकार की कृषि है जिसके अन्तर्गत किसी गाँव या क्षेत्र की समस्त कृषि भूमि को शामिल करके सामूहिक रूप से कृषि कार्य किया जाता है। खेत में काम करने वाले को काम के हिसाब से पैसे दे दिये जाते है या कुल उत्पादन में उसके काम के हिसाब से हिस्सा दे दिया जाता है।

↳ किसी ग्राम द्वारा संचालित सामूहिक कृषि को सहकारी खेती कहा जाता है। जबकि राज्य द्वारा संचालित सामूहिक खेती एक प्रकार की राजकीय खेती होती है इसके उत्पादन पर राज्य का अधिकार होता है।

↳ सामूहिक खेती का चलन साम्यवादी अर्थव्यवस्था में पाया जाता है।

↳ यह खेती रूस व चीन में की जाती है।

(2) सहकारी कृषि :-

↳ यह सहकारिता पर आधारित कृषि है।

↳ इसमें अनेक कृषक आर्थिक लाभ के लिए एक समूह बनाकर अपने सामूहिक खेतों पर कृषि करते है।

↳ छोटे-छोटे कृषक मिलकर बड़ी कृषि भूमि पर कृषि करते है

↳ लगने वाले खर्चे को आपस में बाँट लिया जाता है।

(3) कृषक कृषि :-

↳ इसमें एक कृषक परिवार छोटे (अपने खेत) में ही कृषि कार्य करता है।

↳ कृषक अपनी आवश्यकतानुसार थोड़ी-थोड़ी फसल उगाते है

↳ गहन कृषि की जाती है।

E) जल की उपलब्धता के आधार पर :-

↳ इस आधार पर कृषि को तीन भागों में विभाजित किया जाता है :-

(1) आर्द्र व तर कृषि :-

↳ इस प्रकार की कृषि उन भागों में की जाती है जहाँ वार्षिक वर्षा 150-200 cm होती है।

↳ इसमें अधिक वर्षा के कारण सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है।

(2) शुष्क कृषि :-

↳ इस प्रकार की कृषि 50 cm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है।

(3) सिंचित कृषि :-

↳ यह कृषि 50-100 cm वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है।

(F) कृषि के अन्य प्रकार :-

(1) सोपानी कृषि :-

↳ यह पहाड़ों व पठारों में की जाने वाली कृषि है।

↳ इसमें सीढ़ी बनाकर खेती की जाती है।

(2) टूक फार्मिंग :-

↳ यह एक आधुनिक कृषि का रूप है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 अध्याय कृषि उत्पादकता

कृषि उत्पादकता
Agricultural Productivity

↳ कृषि उत्पादकता कृषि क्षमता का ही मापक है।
↳ कृषि उत्पादकता का मापन प्रति हैक्टेयर से किया जाता है।
↳ कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक

भौतिक कारक	आर्थिक कारक	अन्य कारक
जलवायु दशाएँ,	बाजार की निकटता	उन्नत बीज
उपजाऊ मिट्टी	यातायात के साधन	उर्वरकों
	श्रमिक पूर्ति	सिंचाई के साधन
		यंत्रीकरण
		कृषि प्रशिक्षण

कृषि उत्पादकता के मापन एवं निर्धारक :-

↳ कृषि उत्पादकता का सम्बंध प्रति हैक्टेयर उत्पादन से है। यह लागत-आगत के मध्य का अनुपात है।
↳ प्रो. स्टाम्प के अनुसार "किसी इकाई क्षेत्र की कृषि उत्पादकता जलवायु एवं अन्य प्राकृतिक तत्वों एवं कृषि क्षमता पर निर्भर करती है।
↳ कृषि उत्पादकता कृषि सक्रियता, कृषि गहनता, कृषि कुशलता पर निर्भर करती है यदि इनमें कमी आती है तो उत्पादकता में भी कमी आती है।
↳ केन्डाल, L.D स्टाम्प, मोहम्द शफी, जसवीर सिंह ने कृषि उत्पादकता अध्ययन में कार्य किया।

कृषि उत्पादकता मापन की विधि :-

• केन्डाल :- प्रति इकाई से प्राप्त आय पर आधारित विधि

- खुसरों :- प्रति इकाई श्रम लागत पर उत्पादन की मात्रा पर आधारित विधि।
- स्टाम्प :- भूमि की वहन क्षमता पर आधारित विधि।
- जसवीर सिंह :- फसल उत्पादन व संकेन्द्रण के आधार पर पदानुक्रम गुंणाक विधि।
- केन्डाल :- पदानुक्रम गुंणाक विधि।

कोटि गुंणाक विधि - केण्डल :-

↳ कृषि उत्पादकता की गणना हेतु सर्वप्रथम केण्डल महोदय ने कोटि गुंजाक विधि का प्रयोग किया।

↳ केण्डल ने इंग्लैण्ड के 48 काउण्टी की उत्पादकता निश्चित करने हेतु 10 मुख्य फसलों के प्रति एकड़ उपज को आधार माना उसके बाद विभिन्न फसलों के प्रति एकड़ उत्पादन के आधार पर प्रत्येक प्रशासनिक काउंटी की प्रत्येक फसल के लिए कोटि निश्चित की गई व कोटि निर्धारण अवरोही क्रम में किया।

इस प्रकार प्रत्येक काउण्टी के दसों कोटियों को जोड़कर फसलो की संख्या ज्ञात की गई इन्ही क्रमों को कोटि गुंणाक कहा गया।

↳ स्टैम्प केण्डल की श्रेणी गुणांक विधि का प्रयोग 20 देशों की प्रमुख फसलों के प्रति एकड़ उत्पादन के आधार पर किया।

↳ भारत में इस विधि का प्रयोग सर्वप्रथम मोम्मद शफी ने किया शफी महोदय ने U.P के सभी जनपदों की कृषि क्षमता के निर्धारण हेतु 8 फसलों के प्रति एकड़ उपज के आधार पर किया।

↳ सपे व देशपाण्डेय ने महाराष्ट्र में कृषि उत्पादकता निर्धारित की।
↳ A.S भाटिया ने उत्तर प्रदेश की कृषि उत्पादकता निर्धारण हेतु उत्पादकता सूचकांक का प्रयोग किया।

प्रमाणिक विचलन / मानक विचलन विधि :-

↳ B.M सिन्हा ने 1968 में कृषि उत्पादकता की गणना के लिए इस विधि का प्रयोग किया।
→ सिन्हा ने 25 फसलों का चयन कर जिला स्तर पर 4 समूहों में विभाजित किया।

(1) अन्न फसलें
(2) दाल
(3) तिलहन फसलें
(4) नगदी फसलें

→ प्रत्येक फसल समूह के मानक विचलन हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया $\sigma = \frac{\sqrt{(c_i - c)^2}}{M}$

→ इनेदी ने किसी इकाई क्षेत्र की फसल उत्पादकता को राष्ट्रीय स्तर पर उत्पादकता से अनुपात ज्ञात करते हुए उस फसल के अन्तर्गत इकाई क्षेत्र में उपयोग की गई कृषि भूमि राष्ट्रीय स्तर पर कुल भूमि से अनुपात के आधार पर उत्पादकता निर्धारित की है। $\frac{Y}{Y_n} : \frac{T}{T_n}$

Y = किसी इकाई क्षेत्र में फसल की उत्पादकता
Yn = राष्ट्रीय स्तर पर उस फसल का उत्पादन